MP Board Class 8th Sanskrit Notes Chapter 12 चित्रकूटम्

चित्रकूटम् हिन्दी अनुवाद

मध्यप्रदेशस्य सतनामण्डले विन्ध्यपर्वतमालायाः मध्ये
नैसर्गिकेऽतरिमणीये विस्तृते क्षेत्रे तीर्थस्थलं चित्रकूटं स्थितम् अस्ति। इदं स्थलं नगरकोलाहलरहितम् प्राकृतिकसौन्दर्यसम्पन्नम् अस्ति। अत्र आगमनेन दर्शनेन च सहजतया आनन्दानुभूतिः जायते। चित्रकूटे सघनानि वनानि सन्ति, अत्र कल-कलनादपूरिताः निर्झराः अपि वर्तन्ते। सर्वत्र हरीतिमा राजते। चित्रकूटस्य धार्मिक, सांस्कृतिक, नैसर्गिकम् अपि महत्त्वं विद्यते। कथ्यते यत्-भगवान् रामचन्द्रः वनवानसकाले सीतालक्ष्मणाभ्यां सह एकादशवर्षाणि यावत् चित्रकूटे एवं निवासं कृतवान्। महर्षिः अत्रिः, साध्वी अनुसूया च अत्रैव तपस्यां कृत्वा आत्मज्ञानम् अलभेताम्। जनश्रुत्यनुसारम् अत्रैव अनसूया ब्रह्म-विष्णु-महेशानाम् स्वतपसा बालरूपेण साक्षात्कारं कृतवती। अत्र अनेकानि दर्शनीयानि स्थलानि सन्ति। यथा.

अनुवाद :
मध्य प्रदेश के सतना जिले में विन्ध्य पर्वतमाला के बीच में प्राकृतिक अति मनोहर विस्तृत क्षेत्र में तीर्थस्थल चित्रकूट स्थित है। यह स्थल नगर के शोरगुल से रहित प्राकृतिक सौन्दर्य से सम्पन्न है। यहाँ आने और देखने से स्वाभाविक रूप से आनन्द की अनुभूति होती है। चित्रकूट में घने वन हैं, यहाँ कल-कल के स्वर से भरपूर झरने भी हैं। सब जगह हरियाली सुशोभित होती है। चित्रकूट का धार्मिक, सांस्कृतिक और स्वाभाविक महत्व भी है। कहा जाता है कि भगवान् रामचन्द्र ने वनवास के समय में सीता और लक्ष्मण के साथ ग्यारह वर्ष तक चित्रकूट में ही निवास किया। महर्षि अत्रि और साध्वी अनुसूया ने यहीं तपस्या करके आत्मज्ञान प्राप्त किया। जनश्रुति के अनुसार यहीं अनुसूइया ने ब्रह्मा, विष्णु और महेश का अपनी तपस्या से बालरूप में साक्षात्कार किया। यहाँ अनेक देखने योग्य स्थल हैं। जैसे-

रामघट्टः-मन्दाकिन्याः तटे रामघट्टः अस्ति। अयम् अतीवरमणीयः घट्टः। अत्र साधूनां महात्मनां तीर्थयात्रिणांच प्रायःसम्मर्दः भवति। सूर्योदयात् सूर्यास्तंयावत्मन्त्रोच्चारणेन वातावरणं गुञ्जायितं भवति। सन्ध्याकाले नीराजनसमये। मनोरमदृश्यं भवति। अत्र नौकाविहारस्य आनन्दाः अपि यात्रिभिः लभ्यन्ते।

अनुवाद :
रामघाट-मन्दाकिनी के तट पर रामघाट। है। यह बहुत सुन्दर घाट है। यहाँ साधुओं, महात्माओं और तीर्थयात्रियों की प्रायः भीड़ होती है। सूर्योदय से सूर्यास्त तक मन्त्रों के उच्चारण से वातावरण गूंजता रहता है। शाम को आरती के समय मनोरम दृश्य होता है। यहाँ नौका विहार का आनन्द भी यात्रियों के द्वारा लिया जाता है।

कामदगिरिः-कामदगिरिस्थलस्य धार्मिकम् महत्त्वं लोकप्रसिद्धम्। एतत् स्थलं हरीतिमाच्छादितम् अस्ति। अत्र श्रद्धालवः भगवतः रामस्य प्रतीकस्वरूपं चरणचिह्नम् पूजयन्ति। मान्यता अस्ति यद् भरतः अयोध्यावासिभिः सह रामं पुनः अयोध्याम् आनेतुम् अत्रैव प्रार्थितवान्। अत्रैव समीपे भरतमिलापमन्दिरम् अस्ति। कामदगिरेः प्रदक्षिणाः जनैः क्रियते।

अनुवाद :
कामदगिरि-कामदगिरि स्थल का धार्मिक महत्व संसार में प्रसिद्ध है। यह स्थल हरियाली से ढका है। यहाँ श्रद्धालु भगवान् राम के प्रतीक स्वरूप चरण चिन्ह को पूजते हैं। मान्यता है कि भरत ने अयोध्यावासियों के साथ राम से पुनः अयोध्या आने के लिए यहीं प्रार्थना की थी। यहीं पास में भरतमिलाप मन्दिर है। कामदगिरि की प्रदक्षिणा (परिक्रमा) लोगों के द्वारा की जाती है।

जानकीकुण्डम्-रामघट्टात् नातिदूरम् एव जानकीकुण्डम् अस्ति। तत्र नौकया अपि गन्तुं शक्यते। अत्र मन्दाकियाः शान्तं जलम् अतीतस्मृतिपूरितम् इव स्थिरम् भाति। वनवासे सीता अत्रैव स्नानं करोति स्म। अत एव एतस्य नाम जानकीकुण्डम् इति प्रसिद्धम्।

अनुवाद :
जानकी कुण्ड-रामघाट से पास में ही जानकी कुण्ड है, वहाँ नाव से भी जाया जा सकता है। यहाँ मन्दाकिनी का शान्त जल प्राचीन स्मृतियों (यादों) से भरा सा स्थिर सुशोभित होता है। वनवास में सीता यहीं स्नान करती थीं। इसलिए ही इसका नाम जानकी कुण्ड प्रसिद्ध हुआ।

अनुसूयाश्रमः-सघनवनमध्ये अनुसयाश्रमः विद्यते। अत्र पक्षिणां कलरवः, निर्झरझर्झरध्वनिः शीतलवायुः च मनांसि रञ्जयन्ति। मन्दाकिन्याः उद्गमस्थलम् एतदेव। अत्र ब्रह्म-विष्णु-महेशात्रि-अनसूयादयः तपस्यां अकुर्वन्।

अनुवाद :
अनुसूया का आश्रम-घने वन के बीच में अनुसूया का आश्रम है। यहाँ पक्षियों की आवाज, झरने की झर-झर ध्वनि और शीतल वायु मन को प्रसन्न करती है। मंदाकिनी का उद्गम स्थल यही है। यहाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, अत्रि, अनुसूया आदि ने तपस्या की।

स्फटिकशिला-जानकीकुण्डसमीपे एव विशाल शिला दर्शनीया वर्तते। अत्रैव जयन्तः काकरूपेण सीताचरणे चञ्चुप्रहारं कृतवान् आसीत् इति प्रसिद्धम्।

अनुवाद :
स्फटिकशिला-जानकी कुण्ड के पास में ही विशाल शिला देखने योग्य है। यहीं जयन्त (इन्द्र का पुत्र, काक रूप धारी) ने काक के रूप में सीता के चरणों में चोंच से प्रहार किया था। ऐसा प्रसिद्ध है।

गुप्तगोदावरी-चित्रकूटतः पञ्चकोशदूरं नयनाभिरामं
सौन्दर्ययुक्तं गुप्तगोदावरीस्थलं वर्तते। अत्र द्वे नैसर्गिक गुहे
स्तः। अत्र निरन्तरं जलम् प्रवहति।

अनुवाद :
गुप्त गोदावरी-चित्रकूट से पाँच कोश दूर नयनाभिराम (आँखें को प्रसन्न करने वाले) सौन्दर्य से युक्त गुप्त गोदावरी स्थल है। यहाँ दो स्वाभाविक गुफाएँ हैं। यहाँ लगातार जल बहता है।

हनुमान्धारा-अत्र उच्चस्थलात् जलम्पतति। जलप्रपातः अत्र खलु द्रष्टव्यः एव। लङ्कादहनानन्तरं रामाज्ञया हनुमान् अत्रैव शीतलत्वं प्राप्तवान् अतः एतस्य नाम हनुमान्धारा इति जनश्रुतिः।

अनुवाद :
हनुमान धारा-यहाँ ऊँचे स्थान से पानी गिरता है। निश्चित ही जल प्रपात यहाँ देखने योग्य है। लंका दहन के बाद राम की आज्ञा से हनुमान ने यहीं ठण्डक प्राप्त की थी। इसलिए इसका नाम हनुमान धारा है ऐसा लोकापवाद है।

https://www.evidyarthi.in/

ग्रामोदयविश्वविद्यालयः-अत्र राष्ट्रसेवकेन नानाजीदेशमुखेन ग्रामोद्धारभावनया नवीनः प्रकल्पः स्थापितः। चित्रकूटग्रामोदयविश्वविद्यालयः। साम्प्रतं सः महात्मागान्धिग्रामोदयविश्वविद्यालयः इति नाम्ना। प्रसिद्धः। अत्र प्राकृतिकचिकित्साप्रकल्पः अपि वर्तते। कृषेः-अनुसन्धानकार्येषु अत्र महती प्रगतिः दृश्यते।

अनुवाद :
ग्रामोदय विश्वविद्यालय-यहाँ राष्ट्रसेवक नानाजी देशमुख ने गाँव के उद्धार की भावना से नवीन प्रकल्प स्थापित किया। 'चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय', इस समय वह 'महात्मा गान्धी ग्रामोदय विश्वविद्यालय' नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ प्राकृतिक चिकित्सा प्रकल्प भी है। कृषि के अनुसन्धान के कार्यों में यहाँ बहुत प्रगति दिखाई देती है।

शब्दार्थाः

मण्डले = जिले में। नैसर्गिके = प्राकृतिक रूप में। अतीतस्मृतिपूरितम् = प्राचीन स्मृतियों (यादों) से भरा। सहजतया = स्वाभाविक रूप से। कल-कलनादपूरिताः = कल-कल स्वर से भरपूर। जयन्तः = इन्द्र का पुत्र (काक रूप -धारी)।सम्मर्दः=भीड़ (समूह)। चञ्चुप्रहारम्=चोंचसे प्रहार। गुंजायितम् = गुंजित हुआ। गुहे = दो गुफाएँ। नीराजनासमये = आरती के समय। प्रकल्पः = विचार। यात्रिभिः = यात्रियों के द्वारा।